eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 01, Special Issue 01, February 2018

उत्तराँचल के ऋतु गीत

[1]डॉ0 शालिनी त्रिपाठी
[1]एसोसिएट प्रोफेसर संगीत, डी0 जी0 पी0 जी0 कालेज, कानपुर उ0प्र0

Received: 08 Feb 2018, Accepted: 10 Feb 2018, Published on line: 28 Feb 2018

Abstract

भारत एक ऐसा देश हैं जहाँ छः ऋतुएं मिलकर एक वर्ष का निर्माण करती हैं। उत्तराँचल में छः ऋतुए एव बारह महीनों को तीन युग्मों में बाँटा गया है –

1. चौमास – आधा जेष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद एवं आधा आश्विन्य।
2. ह्यून – आधा आश्विन्य, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष एवं माघ।
3. रूड़– फाल्गुन, चौत्र, वैशाख एवं आधा ज्येष्ठ।

ये तीनों युग्म 'मौसम' कहलाते हैं। ऋतुओं का यहाँ अलग महात्म्य है। बसन्त ऋतु की बसन्ती (चल बसन्त) बयार में गाये जाने वाले भेटौली गीत एक ओर मार्मिकता, भाई–बहन का स्नेहित सम्बन्ध एवं संस्कृति का उद्घोष करते हैं। तो दूसरी ओर चैत, वैशाख में गाए जाने वाले 'ऋतुरैण' नूतन वर्ष का स्वागत एवं लोक मंगल की कामना से भरे होते हैं। ऋतु गीतों में लोक मानवों की समृद्धि सुख सौभाग्य की कामना, मुख्य प्रतिपाद्य होती है। चैत (नव वर्षारम्भ) में कुमारी कन्याओं के मुख से निकले वचन लोक मंगल को साकार करते हुए प्रतीत होती है। जैसे–

फूल देली छम्मा छी
दैणों द्वार भर भकार त्वी देली सों नमस्कार।
आवौ देली पूजों द्वार,
भाई जीरो लाखबरीस,
बैणा जी से लाख बरीस।
फूल देली छम्मा छी।।

बसन्त की छटा हिमालय की अपनी विशेषता है। यहाँ बसन्तागमन के साथ त्यौहारों का आगमन माना जाता है। बसन्त पंचमी के दिन लोक शुभकामनाएं देते है।

सफल करो तुमन हुणि नयों साल श्री भगवान
रंगीला सजीला फूल ऐगी डाला बोट सबै हरी है गई।
तुमारा भंडार भरी जौन, अन–धन की बरकत है जावौ
ऊना रौन ऋतु मैना, हुनी र वौं यो संक्रात।।

बारहमासा

बारह महीनों के प्राकृतिक परिवर्तनों के साथ इनका (गीतों का) जन्म होता है। गढ़वाली 'बारहमासों' में महीने–विशेष की सामान्य प्राकृतिक स्थिति तथा उस समय खेतों में किये जाने वाले श्रम–जैसे फसल काटना, गोड़ना, बोना आदि का भी उल्लेख मिलता है, कुछ बारहमासी गीत बहुत

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 01, Special Issue 01, February 2018

लम्बे होते हैं। जिसमें सम्पूर्ण प्रकृतिक का भव्य चित्रण होता है और बाढ़ में नारियों की व्यथा–कथा विस्तार से वर्णित हुई मिलती है। कुछ बारहमासी गीत 'दोहा' शैली में मिलते हैं। जिनकी पहली पंक्ति में 'ऋतु क्रम के अनुसार धान बोने, गेहूँ काटने, और फसल निराने (गोड़ने) का उल्लेख मिलता है और दूसरी पंक्ति में विरह की पीड़ा, तज्जन्य शारीरिक दुर्बलता और मानसिक पीड़ा की अभिव्यक्ति मिलती है। जिन ऋतुओं में खेती का कार्य नहीं होता है, उनमें ऋतु–सौन्दर्य का सुन्दर वर्णन मिलता है, जो इस प्रकार है।

आयो मैना चौत को, हे दीद्यो हे राम।
उठीक फलारी झुसमुस, लगि गैन विष काम।
मैना आयो बैसाग को, सुख की नी आस.
आयो मैनो जेठ को, भक्को वैगे भौत
स्वामी मेरो घर नी, समझी रयूँ मी मौत।
मास पैलो बसगाल को, आयो यो आसाड
मैं पापणी झुरि–झुरि मरयूँ, मास रयो न हाड़।
मास दूसरो बसगाल को, आयो स्यो सौण,
चिट्ठी नी पतरी ऊँकी, कुजाणी कब धौर औण,
मास आयो भादौं को, डॉड्यू कुयेड़ी लौंकी
तेरी खुद स्वामी! जिकुड़ी माँ बिजली सी चौंकी।
आयो मैंना असूज को, बादल गैन दूरू,
जोन कांठो मां औंदी, जियालाग बुरू।
आई दिवाली कातिकी, चढ़े घर–घर तैकू,
यूँ दिनों स्वामी का बिना, ज्यू लगदो कैकू?
आयो मैंना मगसीर को, हे बैण्यों, हे राम,
स्वामी की खुद मां हाड राये न चाम।
पूस मास की ठंड बड़ी, थर–थर कंपद गात,
कनि होली भग्यान स्या पति होला जौंका सात।
लगी मैना माघ को, गौं–गौं छन ब्यो,
ब्योली आंखी झुकैक, ब्योला से मिलदी स्यो।
फागुण मैना आये, हरी–भरी वैन सारी,
मी झूरि–भूरि मरियूँ, एकुला बांदर की चारी।

अर्थ– 'चैत का महीना आ गया हैं चारो ओर फूल खिल गए हैं और सब लोग अपने अपने कामों में लग गए हैं, बैसाख के महीने में सुख की आशा करना व्यर्थ है। गेहूँ के 'पूलों' को उठाते–उठाते कमर में 'झांस' पड़ गयी है जेठ के महीने की गर्मी असह्य हो गयी है। इधर पति जी भी घर में नहीं है। ऐसे में, मैं समझ रही हूँ कि मौत आ गयी है। आषाढ़ के महीने के आने पर मैं पति के वियोग में मर–सी गई हूँ, शरीर में न मांस ही रह गया है और न हड्डियों में ही ताकत शेष है। काले–काले

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 01, Special Issue 01, February 2018

बादलों वाला सावन का महीना आ गया है। रिमझिम वर्षा हो रही है। मन अकुला रहा है। परन्तु उनकी (पति की) चिट्ठी तक नहीं आ रही कि वे घर कब आ रहे हैं? देखते–देखते भादो का महीना आ गया है। चारो ओर कुहरे के बादल छा गए हैं। पति की याद बहुत सताने लगी है। जब–जब याद अधिक आने लगती है तो बादलों में जैसे बिजली चमकती है वैसे ही उनकी स्मृति मन को विद्युत की तरह चलायमान कर देती है। असूज के महीने बादल न जाने कहाँ दूर चले गये है। चाँद का सुन्दर मुखड़ा पहाड़ों की चोटी के ऊपर जहाँ दिखाई देता है वहाँ बिना स्वामी के मन में बेचौनी उत्पन्न हो जाती है। कार्तिक के महीने में दीपावली के अवसर पर घर–घर में नाना प्रकार के व्यंजन बनने शुरू हो गए हैं। चारो ओर खुशी का वातावरण रहता है। पति के बिना कौन नारी ऐसे समय अकेले रह सकेगी? किस नारी का मन भला ऐसे समय (बिना पति के) सुख पा सकता है। हे बहना! मार्गसीर के महीने में पति की याद में तो शरीर भी ठिठुर जाता है। हडडी–मांस का भला क्या ठिकाना? पूस महीने की ठण्ड में सम्पूर्ण शरीर थर–थर
कांपने लगता है। ऐसे समय ! वे कैसी भाग्यशाली बहने होंगी, जिनके साथ उनके
पति होंगे। माघ का महीना शादियों का महीना है। दुल्हने अपने–अपने दूल्हों से मिलकर खुशिया मनाती है। फागुन के महीने में सभी दिशायें हरी–भरी हो गयी हैं. पर मैं अभागी! अकेल बन्दर की तरह टुकुर–टुकुर कर (बिना पति के) इधर–उधर देखती ही रह गई।

'दोहा–शैली' के अतिरिक्त उत्तरांचल में लम्बे गीतों के रूप में भी 'बारहमासे' मिलते हैं, परन्तु उनका विषय ऋतुओं का वर्णन ही मुख्य होता है।

चैती

बसन्तागमन पर ऋतु गीतों और' रितुरैण' गायन के साथ यह नृत्य चलता है। इन गीतों के गायक कलाकार औजी, वादी, ढोली, दास या मिरासी कहलाते हैं
जो गाते–नाचते घर–घर जाकर 'चौतोल' (चौती–पसारा) माँगते हैं। गायक कलाकार ढोलक या हुड़के पर रितु गाता है और उसके साथ महिलायें गीत गाते हुए नृत्य करती है। इस एकल नृत्य की नृत्यांगना नृत्य विद्या में पारंगत होती है। गीत के आरोह–अवरोह क्रम से वह विधि भाव–भंगिमाओं को व्यक्ति करती हैं। इन्हीं गंधर्व के सुरीले –दर्दीले अमर स्वर में आज भी उत्तराँचल की नृत्य–गीत परम्परा इतनी समृद्ध है। इन चैती गीतें के बीच में 'कफलिया' नृत्य भी चलता था जो अब समाप्त हो चुका हे। बदलते सामाजिक मूल्यों और सामाजिक परिवर्तनों के कारण ''चैती नृत्य'' की परम्परा अब लगभग समाप्त प्राय है। बसंत आगमन तथा ऋतरैण पर गाये जाने वाले गीत इस प्रकार हैं –

कैसू लै राज्यो छ, यो मनमा रे हाँ?
कैसू लै राज्यो छ, गोरि दिनेको सुरिजा रे हाँ?
कैसूं लै राज्यो छ, यो रात को चन्द्रमा रे हाँ?
कैसू लै राज्यो छ, यो भूमि को भुम्यालो, रे हाँ?
कैसू लै राज्यो छ, यो खोली को गणे रे हाँ?
कैसू लै राज्यो छ, यो मोरी को नरैण रे हाँ?

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 01, Special Issue 01, February 2018

कैसू लै राज्यो छ, यो सुक्यालो संसार रे हाँ?
और नारी सुण रे हाँ
ऋतु बसंता नारी खेलिले फाग
रंगीलो पिङागाले भँवरा खेलिले फाग।

x X X X

रितु ऐगी हेरी फेरी यो गरमा रितु ए
दैज्वाली मैत्वाली को यो लाडिलो चौत ए।
बांश भया कफुवा ओ मैती का देशा ए
इजू मेरी सुणली मैं भेटोली लगाली वे
ओ डाली में को कफुवा पुछड़ी हिलालो
बिन मैं की बैणवाँ ओ आँसुवै ठावैली ए।
रितु ऐगी हेरी फेरी यो गरमा ऋतु ए
मरीग मानिखा पलटी नै औनों।
जो भागी जियला नौ ऋतु सुणला
यो दिन यो मासा आ जुग जुग भेटिया वे।'

न्यौली

न्यौली का प्रमख विषय श्रृंगार है। विप्रलंभ श्रृंगार और करुण विप्रलंभ रस विद्यमान है। छेड–छाड़, हास–परिहास, उत्कंठा, उपालंभ, प्रिय–मिलन, प्रकृति आदि का वर्णन होता है। न्यौली–कोयल की एक पहाड़ी प्रजाति है जिसे उत्तराँचल में विराहा का प्रतीक माना जाता है। प्रियतम के वियोग में गहरे घने वन में वह निरन्तर 'झूमती' (रोती) रहती है। ये गीत मुख्य रूप से उत्तराँचल के डोटी पिथौरागढ़ और सोर और सीरा में गाये जाते हैं। न्यौली गीतों में भाग्यवादिता सहनशीलता, एकान्तिकप्रेम, विरह, ऋतु वर्णन तथा स्थानीयता की प्रवृत्ति पाई जाती
है।

हरद्वाणी को गोरू बाकरा कालदूंगी चरान।
ज्यो त्यारा आंसीक बाजौ, ज्यौली वाँ म्यारा परान।
वाँ म्यारा परान न्योली, वाँ म्यारा परान।
कमर लटक दिछ धमेली को डोर
ऐलाका छुटन हात, छुटी जाना पो।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 01, Special Issue 01, February 2018

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. देव सिंह पोखरिया– कमाऊँनी संस्कृति, पृ0स0 23
2. शिवानन्द नौटियाल– गढ़वाली लोकगीत, पृ0सं0 42–43
3. देवसिंह पोखरिया–लोक संस्कृति के विविध आयाम–मध्य हिमालय के संदर्भ में मोहन उप्रेती–कुमाऊँनी लोकगीत, पृ0सं0–24
4 मोहन उप्रेती–कुमाऊँनी लोकगीत, पृ0सं0–21
5. मोहन उप्रेती– कुमाऊँ
6. देव सिंह पोखरिया–लोकसंस्कृति के विविध आयाम मध्य हिमालय के संदर्भ में, पृ0सं0 15
7. डॉ दिनेशचन्द्र बलूनी–उत्तरांचल संस्कृति, लोकजीवन इतिहास एवं पुरातत्व, पृ0सं0 76